2015

HINDI

[Honours]

PAPER – II

Full Marks : 90

Time : 4 hours

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

[NEW SYLLABUS]

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15 x 2

   (*क*) कबीर के दार्शनिक विचारों की विवेचना कीजिए ।

   (*ख*) सूर के वात्सल्य-वर्णन पर विचार कीजिए ।

   (*ग*) तुलसीदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए ।

(घ) घनानंद के पदों के आधार पर घनानंद की प्रेम-व्यंजना पर विचार कीजिए ।

(ङ) भूषण की वीर रसात्मक कविताओं की समीक्षा कीजिए ।

(च) "केशवदास को काव्य-रीति के प्रति आग्रह, पाण्डित्य के प्रति मोह और श्रृंगारिकता के प्रति आकर्षण है" — इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं *चार* की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 8 × 4

(क) साधो, सो सतगुरु मीहिं भावै ।
सत्त प्रेम का भर-भर प्याला, आप पिवै मोहि प्यावै ।
परदा दूर करै आँखिन का, ब्रह्म दरस दिखलावै ।
जिस दरसन में सब लोक दरसै, अनहद सब्द सुनावै ।
एकहि सब सुख-दुख दिखलावै, सब्द में सुरत समावै ।
कहैं कबीर ताको भय नाहीं, निर्भय पद परसावै ।

(ख) नागमती चितउर पंथ हेरा । पिउ जो गए फिरि कीन्ह न फेरा ।
नागरि नारि काहुँ बस परा । तेइँ बिमोहि मोसौं चितु हेरा ।
सुवा काल होइ लै गा पीऊ । पिउ नहिं लेत लेत बरु जीऊ ।
भएउ नरायन बावन करा । राज करत बलि राजा छरा ।
करन बान लीन्हेउ करिं छंदू । भर्थरि भएउ छल मिला अनंदू ।
मानत भोग गोपीचँद भोगी । लै उपसवा जलंधर जोगी ।

लै कान्हहि भा अकरूर अलोपी । कठिन बिछोउ जिअै किमि गोपी ।
सास्स जोरी किमि हरी मारि गएउ किन खग्गि ।
झुरि-झुरि पाँजरि धनि भई बिरह कै लागी अग्गि ।।

(ग) अबिगत गति कछु कहत न आवै ।
ज्यौं गूँगें मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै ।
परम स्वाद सबही सु निरंतर अमित तोष उपजावै ।
मन-बानी कौं अगम-अगोचर सो जाने जो पावै ।
रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु निरालंब कित धावै ।
सब विधि अगम बिचारहिं तातैं सूर सगुन-पद गावै ।

(घ) कोटि जतन कोऊ करौ, परै न प्रकृतिहिं बीचु ।
नल बल जलु ऊँचै चढ़ै, अंत नीच कौ नीचु ।।
दृग उरझत-टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति ।
परति गाँठि दुरजन हियैं, दई, नई यह रीति ।।

(ङ) अति सूधो सनेह को मारग,
है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं ।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ,
झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं ।
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ,
यहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं ।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ,
मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं ।।

(च) तुम सिवराज ब्रजराज अवतार आजु
तुमही जगत काज पोषत भरत हौ ।
तुम्है छोड़ि यातै काहि बिनती सुनाऊँ मैं
तुम्हारे गुन गाऊँ तुम ढीले क्यों परत हौ ।
भूषन भनत वहि कुल मैं नयो गुनह
नाहक समुझि यह चित्त मैं धरत हौ,
और बाँभनन देखि करत सुदामा सुधि
मोहि देखि काहे सुधि भृगु की करत हौ ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1 × 8

(क) कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' किसने कहा है ?

(ख) 'कवितावली' किस भाषा में रचित है ?

(ग) 'विरह सँचान भँवै तन चाँड़ा' — 'सँचान' शब्द का अर्थ लिखिए ।

(घ) 'पुष्टिमार्ग की जहाज जात है, सो जाको कछु लेना हो सो लेउ' — किसका कथन है ?

(ङ) 'वियोग वेलि' पुस्तक के रचयिता का नाम लिखिए ।

(च) मिश्रबंधुओं ने किस कवि की 'कवि सिरताज' और 'पहिलो आचारज' की उपाधियों से विभूषित किया है ?

(छ) भूषण ने अपनी वीररस पूर्ण रचनाओं का नायक किसे बनाया है ?

(ज) बिहारी की काव्यभाषा क्या है ?

4. किन्हीं *चाँच* पर टिप्पणी लिखिए : 4 × 5

(क) कबीर की भाषा

(ख) सूरदास का वियोग-वर्णन

(ग) 'कवितावली' में चित्रित समाज ।

(घ) बिहारी के दोहों में नीति-वर्णन

(ङ) घनानंद की विरह-भावना

(च) केशवदास की 'रामचंद्रिका'

(छ) भूषण की राष्ट्रीयता ।

(ज) जायसी का सामान्य परिचय ।